संकल्प

HINDI LITERACY TEAM
CHANDIGARH

मैं हूँ प्रेरणा

आज प्रेरक घर लौटते हुए रास्ते में प्रेरणा दीदी से बोला, "दीदी आपने कहा था कि आप रोज कुछ नया बताओगी|"

प्रेरणा बोली," ठीक है, आज मैं तुम्हें पहेलियों के बारे में बताऊंगी|"

मैं हूँ प्रेरक

प्रेरक, जानते हो.....

किसी व्यक्ति की बुद्धि या समझ की परीक्षा लेने वाले ऐसे प्रश्न, वाक्य अथवा वर्णन को पहेली (Puzzle) कहते हैं, जिसमें किसी वस्तु का लक्षण या गुण, घुमा-फिराकर भ्रामक रूप में प्रस्तुत किया गया हो और उसे बूझने अथवा उस विशेष वस्तु का नाम बताने का प्रस्ताव किया गया हो। इसे 'बुझौवल' भी कहा जाता है। संस्कृत में पहेली को 'प्रहेलिका' या 'प्रहेलि' कहते हैं- इसके पर्याय प्रवल्हिका, प्रवह्लि, प्रहेली, प्रहलीका, प्रश्नदूती, तथा प्रवहली है।अंग्रेजी में पहेली को 'रिडिल' अथवा 'एनिग्मा' कहते हैं, जिसकी रचना विशेष रूप से छंदों में की गई है।

पहेली व्यक्ति की चतुरता को चुनौती देने वाले प्रश्न होते हैं। जिस तरह से गणित के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, उसी तरह से पहेलियों को भी नज़रअन्दाज नहीं किया जा सकता। पहेलियाँ आदि काल से व्यक्तित्व का हिस्सा रहीं हैं और रहेंगी। वे न केवल मनोरंजन करती हैं बल्कि दिमाग को चुस्त एवं तरो-ताज़ा भी रखती हैं।इसे बहुधा कवित्वपूर्ण शैली में लिखा जाता है ताकि सुनने में मधुर लगे। यह परंपरा भारत देश में प्राचीन काल से ही प्रचलित है।

भारत के समान यूनान में भी पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं, जिनमें पहेलियाँ बूझने पर ही लड़कियों को सफल व्यक्तियों के वरण के लिए प्रस्तुत किया जाता था। थीबन स्फीनिक्स पौराणिक कथा के अनुसार रानी जोकास्टा से विवाह करने के लिए पहेली प्रतियोगिता आयोजित की गई थी।
हिंदी में भी पहेलियों का व्यापक प्रचलन रहा है। इस संबंध में अमीर खुसरो की पहेलियों का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। जैसे:-
एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।
(उत्तर- आकाश, मोती से अभिप्राय तारों से है)
नवीन युग में गणित को लोकप्रिय बनाने में जितना काम मार्टिन गार्डनर ने किया शायद उतना किसी और ने नहीं किया।

समझ गया दीदी..... अब मुझसे भी तो पूछो कुछ ज़रा.....

तो मेरी पहेलियों के उत्तर दो ज़रा.....

1.बिंदी हूँ, पैसा हूँ, डोसा हूँ, चपाती हूँ,
बताओ तो भला, किस आकार में आती हूँ?

2.आठ भुजाओं वाला मैं, लूडो का राजा हूँ,

फ्रिज खोला तो पाया सबने, बर्फ का टुकड़ा ताज़ा हूँ|

3.जन्मदिन पर खाए, मैंने समोसे चार ,
बोले दादा बता तो, क्या है इनका आकार?

4. पाँच- पाँच हैं बाहें मेरी, कटी भिंडी में दिखता हूँ,
फुटबॉल के काले रंग में, बाजारों में बिकता हूँ।

5.चॉकलेट का टुकड़ा हूँ, शतरंज का बोर्ड हूँ,
सफेद-काली गोटियों से खेला जाता, कैरम बोर्ड रोज़ हूँ,
बताओ मेरा नाम, मैं कौन हूँ?

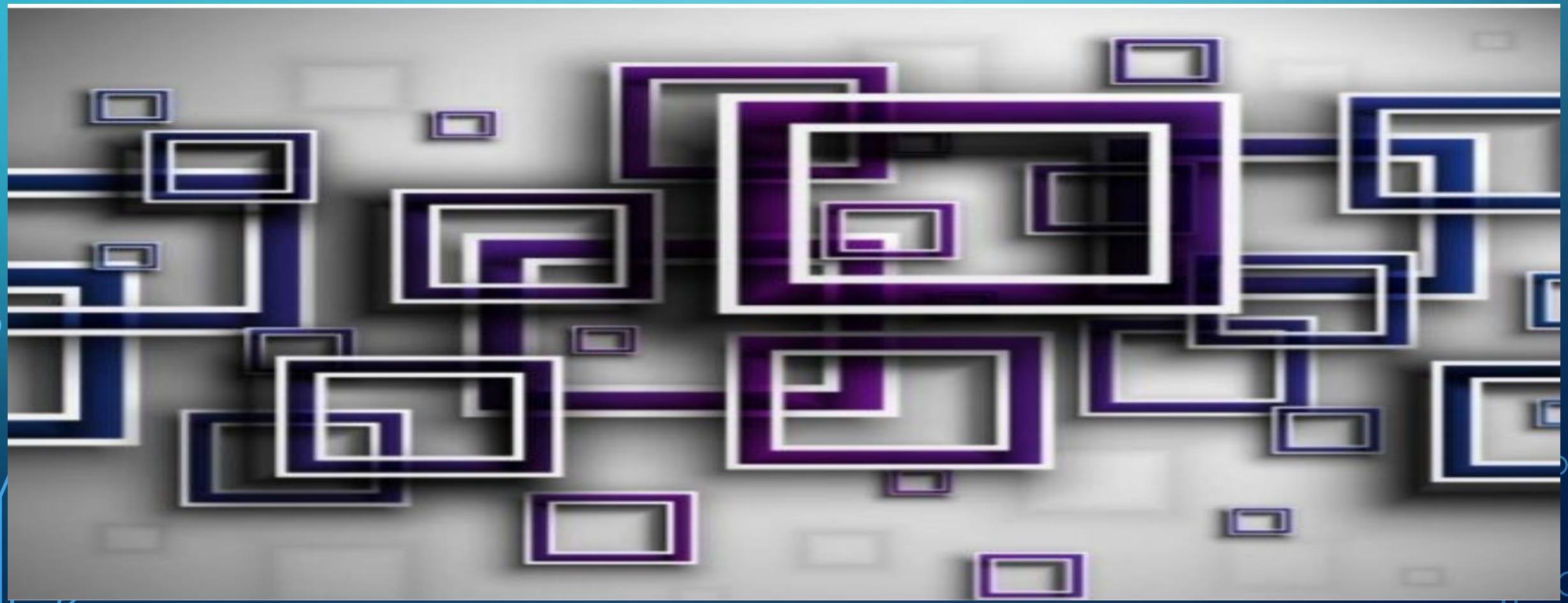

6.मेरी पानी की बोतल सा, घड़ी में लगे सेल सा,
मोमबत्ती के आकार सा, बताओ तो ज़रा, आकार है मेरा कैसा?

7.जन्मदिन की टोपी मेरी, हाथ में जो आइसक्रीम तेरी, क्रिसमस ट्री के समान है,
गणित में बोलो तो मेरा क्या नाम है?

8.दिन भर मुझ में डूबे रहते हो, आजकल सबके मन को भाते हो,

लॉकडाउन में पढ़ाई करवाई, इस टीवी, मोबाइल ने,

बताओ किस आकार में आते हो?

9.आकाश में टिमटिमाते हैं, दूर से बहुत सुंदर नजर आते हैं, अध्यापिका जब कॉपी में दे, तो मन को बहुत भाते हैं|

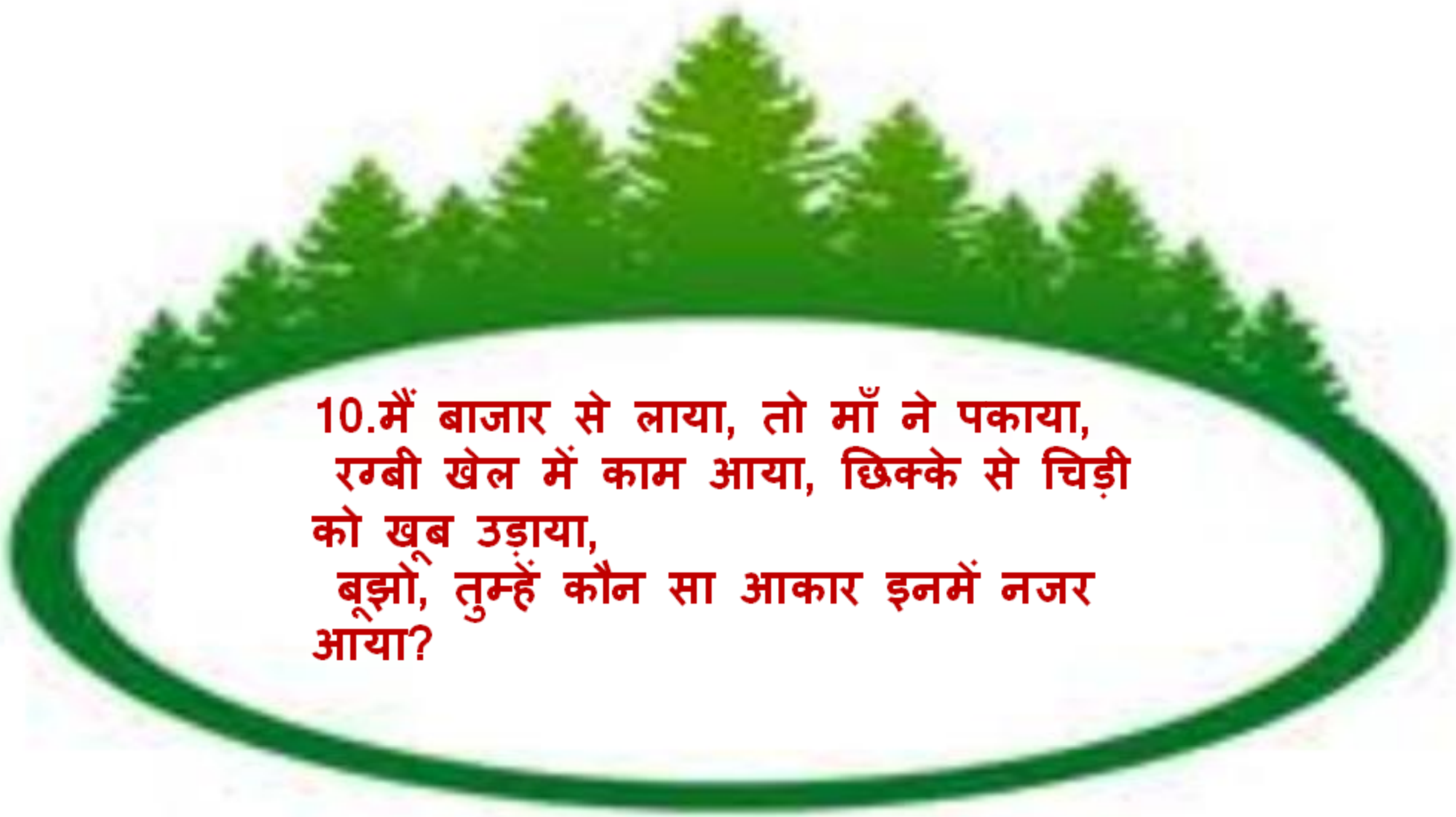

10.मैं बाजार से लाया, तो माँ ने पकाया,
रग्बी खेल में काम आया, छिक्के से चिड़ी को खूब उड़ाया,
बूझो, तुम्हें कौन सा आकार इनमें नजर आया?

उत्तर

1.चक्र,वृत्त

2.घन

3.त्रिकोण

4.पंचभुजी

5.वर्गाकार

6.बेलनाकार

7.शंकु

8.आयत

9.तारा

10.अंडाकार

पत्रिका 'संकल्प' का प्रस्तुत अंक कक्षा छठी की पाठ्यपुस्तक वसंत में संकलित निबंध 'अक्षरों का महत्व' तथा कक्षा दसवीं की पाठ्यपुस्तक 'कृत्तिका' भाग-2 में 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा !' से प्रेरित है । यह सीखने के विभिन्न प्रतिफलों जैसे - स्वाभाविक अभिव्यक्ति, आसपास के परिवेश के प्रति जागरूकता, अनुमान और कल्पना संबंधी दक्षताओं व रूचियों को पूर्ण करता है।